विचार बिन्दु

निरंतर विकास जीवन का एक नियम है। और जो भी व्यक्ति खुद को सही दिखाने के लिए अपनी रूढ़िवादिता को बरकरार रखने की कोशिश करता है वो खुद को एक गलत स्थिति में पंहुचा देता है। –महात्मा गांधी

महिलाओं के स्वाभिमान पर जुबानी हमले

देश की मीडिया विशेषकर इलेक्ट्रॉनिक पर सरेआम महिला नेताओं के शरीर और चरित्र पर जुबानी हमलों की झड़ी लगी रहती है। अनेक उदाहरण दिए जा सकते हैं। यहाँ किसी का नाम लिखने की जरुरत नहीं है। ऐसे कार्यों में पक्ष और विपक्ष दोनों के नेता समान रूप से जिम्मेदार है। हमारी कथनी और करनी में कितना अंतर है, यह साफ़ दृष्टिगोचर होता है। बात–बात पर महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार आरोपित करने वाली महिला नेता ऐसी घटनाओं पर चुप्पी साध लेती है। वे इस दौरान पार्टी लाइन पर चलती है और उन्हें इस बात से कोई मतलब नहीं है कि उनकी पार्टी के नेताओं की महिलाओं के बारे में क्या सोच है। आश्चर्य तब होता है जब महिला नेता ही दूसरे पक्ष की महिला नेता पर अशोभनीय टिप्पणियां करती है। कहने का तात्पर्य है महिला ही महिला की दुश्मन बन जाती है।

हमारे देश में नारी पूजने का हम गर्व के साथ स्मरण करते हैं।भारतीय संस्कृति, सदैव 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता' सिद्धान्त का अुनगामी है। भारत में सर्वदा नारी को अत्यन्त उच्च स्थान पर प्रतिष्ठित किया गया तथा उसे लक्ष्मी, देवी, साम्राज्ञी, महिषी आदि सम्मानसूचक नामों से अलंकृत किया जाता था। मगर यह भी सच है मौका मिलते ही हम नारी की अस्मिता से खिलवाड़ करने से नहीं चूकते है। चुनाव आते ही हमारे देश में तरह–तरह के बोल सुनने और देखने को मिलते है। हम बात कर रहे है महाराष्ट्र और झारखण्ड चुनावों की।

चुनावों के दौरान नारी की अस्मिता को लेकर एक बार फिर घमासान मचा हुआ है और एक–दूसरे पर आरोपों की झड़ी लगायी जा रही है। महाराष्ट्र के एक बड़े नेताजी ने चुनाव लड़ रही एक महिला नेता को इम्पोर्टेड माल से विभूषित किया तो झारखण्ड में एक मंत्रीजी ने एक महिला नेता को रिजेक्टेड घोषित कर दिया। यह तो एक बानगी है। ऐसी घटनाएं हमारे देश में आये दिन देखने और सुनने को मिल रही है। मौका मिलते ही हम महिलाओं को दुत्कारते देर नहीं करते।

एक तरफ सियासी पार्टियां अपने चुनावी घोषणा पत्रों और गारंटियों में महिला वोटरों को लुभाने के लिए तरह–तरह के प्रलोभन देते है वहीं चुनाव लड़ रही महिलाओं के चीर हरण में जरा भी विलम्ब नहीं करती। देश का दुर्भाग्य है महिलाओं पर अशोभनीय टिप्पणी करने वाले नेता जनमत को देखते ही माफ़ी मांगने से गुरेज नहीं करते। मगर आज महिलाओं के समक्ष जो वास्तविक चुनौतियां है उस पर गंभीरता से मंथन करने की जरुरत है। देशभर में इन दिनों महिलाओं पर अत्याचार, छेड़खानी और दुष्कर्म की वारदातों से समाचार पत्रों के पन्ने रंगे होते है। दुनियां चाहे कितनी ही तरक्की कर ले मगर महिलाओं के साथ दोयम दर्जे का व्यवहार आज भी जारी है। हम अपने व्यवहार और आदतों को बदलने को तैयार नहीं है। हम सुधरने को तैयार नहीं है। अपनी गलती का दोषारोपण महिला पर लगाने को जैसे तत्पर रहते है। यह कहते हमें शर्म नहीं आती कि महिला रात को क्यों घूमती है। हकीकत यह है कि महिलाएं आज भी अपनी अस्मिता की रक्षा, न्याय और अधिकारों के लिए संघर्ष कर रही है। फिर बात करते है महिला समानता की। जब तक हम अपनी कथनी और करनी में सुधार नहीं करेंगे तब तक समानता और विकास की बात अधूरी होगी।

महिला समानता और सुरक्षा आज सबसे अहम मुद्दा है, जिसे किसी भी हालत में नकारा नहीं जा सकता। सच तो यह है कि एक छोटे से गांव से देश की राजधानी तक महिला सुरक्षित नहीं है। अंधेरा होते-होते महिला प्रगति और विकास की बातें छू-मंतर हो जाती हैं। रात में विचरण करना बेहद डरावना लगता है। कामकाजी महिलाओं को सुरक्षित घर पहुँचने की चिंता सताने लगती है।

सदियों से हमारा समाज पुरूष प्रधान समाज रहा है। हमने नारी को दोयम दर्जे का माना है। आज समाज के दोहरे मापदण्ड नारी को एक तरफ पूजनीय बताते हैं तो दूसरी तरफ उनका शोषण करते हैं। यह नारी जाति का अपमान है। महिला समाज से वही सम्मान पाने की अधिकारी है जो समाज पुरूषों को उनकी गलतियों के बाद भी एक अच्छा आदमी बनने का अधिकार प्राप्त करता है। सीता से लेकर द्रौपदी तक के उदाहरण हमारे सामने हैं।

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 14,15 और 16 में देश के प्रत्येक नागरिक को समानता का अधिकार दिया गया है। समानता का मतलब 'समानता', इसमें किसी प्रकार का लिंग भेद नहीं है। समानता, स्वतंत्रता और न्याय का अधिकार महिला–पुरुष दोनों को समान रूप से दिया गया है। शारीरिक और मानसिक तौर पर नर–नारी में किसी प्रकार का भेदभाव असंवैधानिक माना गया है। हालांकि आवश्यकता महसूस होने पर महिलाओं और पुरुषों का वर्गीकरण किया जा सकता है। अनुच्छेद–15 में यह प्रावधान किया गया है कि स्वतंत्रता–समानता और न्याय के साथ–साथ के महिलाओं की सुरक्षा और संरक्षण का काम भी सरकार का कर्तव्य है। मगर इसे केवल सरकार के भरोसे नहीं छोड़ा जाता। समाज को भी अपनी भूमिका निभानी होंगी और अपने स्वार्थों के वशीभूत होकर नारी का अपमान करने वाले लोगों को सबक सिखाना होगा।

महिला आबादी की वास्तविकता और धरातलीय चुनौतियों को समझने की जरूरत है। मुट्ठी भर महिलाओं के आगे बढ़ने से सम्पूर्ण महिला समाज का उत्थान नहीं होगा। महिला समानता और सुरक्षा आज सबसे अहम मुद्दा है, जिसे किसी भी हालत में नकारा नहीं जा सकता। सच तो यह है कि एक छोटे से गांव से देश की राजधानी तक महिला सुरक्षित नहीं है। अंधेरा होते–होते महिला प्रगति और विकास की बातें छू–मंतर हो जाती हैं। रात में विचरण करना बेहद डरावना लगता है। कामकाजी महिलाओं को सुरक्षित घर पहुँचने की चिंता सताने लगती है। ऐसे में जरूरी है कि हम नारी समानता और सुरक्षा की बात पर गहराई से मंथन करें।

आज आवश्यकता है स्त्रियों को उनके अधिकार दिलाने की। उन्हें शिक्षित, स्वावलम्बी, मजबूत और अधिकार चेतना बनाने की। सरकार द्वारा महिलाओं के कल्याण हेतु कई कानून बनाए गए परंतु वे सभी कागजों में ही सिमटकर रह गए। जबकि इन कानूनों को जन–जन तक पहुंचाने की आवश्यकता है और दूरदर्शन, निजी चैनल व रेडियो के माध्यम से यह भलीभांति संभव है। इन्हीं माध्यमों से महिलाएं विवाह, दहेज, बलात्कार, संपत्ति अधिकार, समान वेतन, प्रसूति–सुविधा आदि के संबंध में आवश्यक जानकारी एवं दिशानिर्देश प्राप्त कर सामाजिक व आर्थिक दृष्टि से सम्मानजनक स्थान पाने की कोशिश कर रही हैं।

बहरहाल जिस तेजी से भौतिकता एवं प्रौद्योगिकी के पक्ष में स्त्री चेतना का विस्तार दृष्टिगोचर हो रहा है यदि उसी गति से स्त्री अपने अधिकारों एवं कर्तव्यों के प्रति सचेत हो सके तो समाज के अनेक ऐसे वलंत प्रश्नों का हल आसानी से मिल सकता है जिनका समाधान कानून द्वारा अद्यपर्यंत संभव नहीं हो पाया है। संचार माध्यमों की ईमानदार प्रतिबध्दता निश्चय ही महिला सशक्तिकरण के इतिहास में एक स्वर्णिम अध्याय जोड़ सकती है। सरकार को भी इस दिशा में सोचने की जरूरत है।

–अतिथि संपादक,
बालमुकुन्द ओझा,
वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार

क्या स्वदेशी सोच हमारी जीवन शैली बदल पाएगी

अविनाश जोशी

स्वदेशी सोच आधुनिक भारतीय समाज के लिए एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। इसका मतलब है अपनी देशीय उत्पादों को प्राथमिकता देना, उन्हें समर्थन देना और स्वदेशी उत्पादों की उपयोगिता बढ़ाना। स्वदेशी सोच विशेष रूप से अर्थव्यवस्था, विज्ञान, प्रौद्योगिकी और सांस्कृतिक क्षेत्रों में महत्वपूर्ण है। यह देश की आत्मनिर्भरता और समृद्धि के लिए एक महत्वपूर्ण अभियान है।

भारतीय वस्तुओ के प्रति अनुराग एवम विदेशी वस्तुओ का बहिष्कार यही तो हमारा मुख्य धर्म होना चाहिए। आज की पीढ़ी को यह सब बताना होगा हमे स्वदेशी उद्योगों, शिक्षा, साहित्य, कला एवं संस्कृति को बढ़ावा देना होगा। फैशन ही सही लेकिन स्वदेशी मोह हमारा मुख्य उद्देश्य होना चाहिए। खादी एवम सूती कपडे का प्रचलन स्वदेशी उत्पाद के प्रति जागरूकता का ज्वलंत उदाहरण है। स्थानीय बाजार में स्वदेशी ब्रांड्स के उत्पादों और सेवाओं को समर्थन देना और बढ़ावा देना अत्यंत महत्वपूर्ण है। इन सभी पहलों के साथ, स्वदेशी ब्रांड्स को उत्पादों और सेवाओं के लिए अधिक विश्वसनीय, उपयुक्त और रचनात्मक समाधान प्रदान करने के लिए प्रयास करना होगा। स्वदेशी सोच देश की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान करती है क्योंकि यह उत्पादन, रोजगार, और आय को स्थानीय स्तर पर बढ़ाती है। स्वदेशी उत्पादन और सेवाओं का समर्थन करने से देश में निजी और सार्वजनिक क्षेत्र का विकास होता है, जिससे सार्वजनिक उत्पादन और सेवाओं की गुणवत्ता भी बढ़ती है। इसके अलावा, स्वदेशी सोच भ्रष्टाचार को कम करने में भी मदद कर सकती है, क्योंकि स्थानीय उत्पादन और सेवाओं को समर्थन करने से विभाजन और अन्य संगठनात्मक असंतोष कम होता है।

स्वदेशी हमारे 'राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम का मूल–मंत्र था' कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं। उन्नीसवीं सदी में दादा भाई नौरोजी की 'ड्रेन थ्योरी' हो या रमेशचंद्र दत्त की लिखी 'भारत का आर्थिक इतिहास' या सखाराम गणेश देउस्कर लिखित 'देशेर कथा' जैसी पुस्तकें हो, सभी के केंद्र में औपनिवेशिक शासन–तंत्र द्वारा देसी संसाधनों का दोहन व देशी धन–संपदा के विलायत में पलायन को रोकना मुख्य सरोकार थे। आधुनिक हिंदी साहित्य के जनक माने जाने वाले भारतेंदु हरिश्चंद्र ने अपने लेखन से स्वदेशी की अलख जगाई। 1905 का बंग–भंग विरोधी आंदोलन भी स्वदेशी की भावना से ओतप्रोत था जब बंगाल में विदेशी वस्तुओं की होली जलाई गई और उनके बहिष्कार पर बल दिया गया। इस स्वदेशी भाव को राष्ट्रीय स्तर पर बहुआयामी स्वरूप प्रदान किया महात्मा गांधी ने 1920 में असहयोग आंदोलन आरंभ करके। उन्होंने इसे न केवल विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार तथा उनके अग्निदाह तक सीमित रखा, बल्कि उद्योग–शिल्प, भाषा, शिक्षा, वेश–भूषा आदि सब पर स्वदेशी का रंग चस्पा कर दिया।

स्वदेशी ब्रांड्स के सामने अंतरराष्ट्रीय ब्रांड्स के प्रति लोगों का विश्वास और विचारशीलता बढ़ाने हेतु स्वदेशी ब्रांड्स को अपने उत्पादों और सेवाओं की उच्च गुणवत्ता और प्रदर्शन को संदर्भित करना होगा। लोगों को स्वदेशी ब्रांड्स के उत्पादों के सामाजिक और पर्यावरणीय मूल्यों को समझाना चाहिए। स्वदेशी ब्रांड्स को अपने ब्रांड इमेज और विश्वसनीयता को मजबूत करने के लिए प्रयास करना होगा। उन्हें नई तकनीकों का उपयोग करके उत्पादों और सेवाओं को बेहतर बनाने का प्रयास करना होगा।

स्वदेशी वस्तुओं के मोह को बढ़ाने हेतु लोगों को स्वदेशी उत्पादों के बारे में जागरूक करें, उनके गुणवत्ता, स्थानीय उत्पादन और पर्यावरणीय लाभों के बारे में बताएं। स्वदेशी उत्पादों का समर्थन करने के लिए लोगों को प्रेरित करें, विशेष रूप से स्थानीय व्यवसायों को समर्थन दें। स्वदेशी उत्पादों की अधिक उपलब्धता सुनिश्चित करें, यह ऑनलाइन या अधिक स्थानीय दुकानों में उपलब्ध हो सकता है। स्वदेशी उत्पादों का उपयोग करने से देश की समृद्धि और आत्मनिर्भरता में योगदान के महत्व को समझाएं। स्वदेशी ब्रांड्स को बढ़ावा देने के लिए उनका ब्रांड इमेज और विश्वसनीयता को मजबूत करें। स्वदेशी उत्पादों के लिए स्थानीय बाजारों और दुकानों में यात्रा करें, और अपने समर्थन का एक विशेष रूप उन्हें दिखाएं। इन तरीकों का अनुसरण करके, स्वदेशी उत्पादों के मोह को बढ़ा सकते हैं और देश के स्थानीय अर्थव्यवस्था को समर्थन दे सकते हैं।

ग्रामीण हाट और हस्तशिल्प स्थानीय स्तर पर स्वदेशी उत्पादों के विकास और प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये उत्पादकों को सीधे बाजार तक पहुँचने का माध्यम प्रदान करते हैं और स्थानीय विकास को समर्थन देते हैं। ग्रामीण हाट और हस्तशिल्प स्थानीय कला, शिल्प, और संस्कृति को प्रमोट करते हैं, जिससे उनकी अर्थात्मकता बढ़ती है। ये हाट और हस्तशिल्प क्षेत्र में रोजगार के अवसर प्रदान करते हैं, विशेष रूप से महिलाओं और गरीब वर्ग के लोगों के लिए।

ये ग्रामीण हाट और हस्तशिल्प स्थानीय उत्पादकों के उत्पादों को बाजार में प्रसारित करने का माध्यम होते हैं। ये हाट और हस्तशिल्प स्थानीय शिल्पकला, बुनाई, और अन्य परंपरागत कलाओं को बचाव और संरक्षण का माध्यम भी बनाते हैं। ये स्थानीय समुदाय के आर्थिक विकास में सहायक होते हैं, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों का उत्थान होता है। इस प्रकार, ग्रामीण हाट और हस्तशिल्प स्थानीय विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और स्वदेशी उत्पादों के प्रसार और समर्थन में मदद करते हैं।

स्वदेश सोच को केवल एक दिखावा मानना गलत हो सकता है। हालांकि, कुछ लोग इसे सिर्फ आधुनिक एवं कुछ अलग दिख सके इसका माध्यम मानते हैं, लेकिन असल में, स्वदेश सोच एक विचारशीलता और सामाजिक परिवर्तन की दिशा है। यह उत्पादन, वित्तीय स्वावलंबन, और स्थानीय समुदायों के विकास को समर्थन करता है। इसका उदाहरण उत्पादों की स्थानीय खरीदारी, स्थानीय उत्पादन को प्रोत्साहित करना, और विदेशी निवेशों के साथ समर्थन का एकीकरण हो सकता है। इसलिए, स्वदेश सोच वास्तव में सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन की अवधारणा है, जो समृद्धि और समाज की उन्नति की दिशा में मदद कर सकती है।

स्वदेशी सोच में खादी का महत्वपूर्ण योगदान है। खादी एक परंपरागत भारतीय वस्त्र है जो देश की स्वतंत्रता संठााम के समय महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। खादी का उत्पादन देश के ठाामीण क्षेत्रों में रोजगार का स्त्रोत बनाता है और स्थानीय विकास को समर्थन करता है। खादी के उत्पादन में श्रमिकों की संख्या बहुत बड़ी होती है, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर प्राप्त होते हैं। यह उत्पादन भी परंपरागत और स्थानीय वस्त्रों का उत्पादन प्रोत्साहित करता है, जो स्थानीय बाजारों को समृद्ध करता है। इसके अलावा, खादी के उत्पादन में विदेशी निवेशों की कमी होती है, जिससे देश की आत्मनिर्भरता को मजबूती मिलती है। खादी उत्पादन और उपभोक्ता के बीच संबंध भी स्थापित करता है, जो राष्ट्रीय एकता और गर्व को बढ़ाता है। इस तरह, खादी स्वदेशी सोच के माध्यम से सामाजिक, आर्थिक, और सांस्कृतिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान करती है।

स्वदेशी मानसिकता और आधुनिक फैशन का संगम आधुनिक जीवनशैली में एक महत्वपूर्ण दिशा है। आज के समय में, लोग अपने स्थानीय वस्त्र, शैली, और विरासत को महत्व देते हैं, जो स्वदेशी मानसिकता को प्रोत्साहित करता है। आधुनिक फैशन में स्थानीय अनुभूति, परंपरा, और कला को शामिल किया जाता है। यह लोगों को अपनी संस्कृति के प्रति गर्व महसूस कराता है और स्थानीय कलाओं को प्रोत्साहित करता है। स्वदेशी मानसिकता के साथ, लोग अपने स्थानीय उत्पादों को पसंद करने और समर्थन करने के लिए प्रेरित होते हैं, जिसमें स्थानीय वस्त्र, उपहार, और आभूषण शामिल हो सकते हैं। इस तरह, स्वदेशी मानसिकता और आधुनिक फैशन दोनों को ही एक मंत्र बना सकते हैं, जो स्थानीय समुदायों को समृद्धि और समाज में गर्व का अहसास कराते हैं।

–अविनाश जोशी,
स्वतंत्र पत्रकार एवं लेखक

9वीं से 12वीं कक्षा की अर्द्धवार्षिक परीक्षाएं इस बार राज्य स्तर पर होगी

शिक्षा निदेशालय ने समान परीक्षा के तहत राज्य के सभी सरकारी और निजी स्कूलों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों की संख्या मांगी

- **माध्यमिक शिक्षा निदेशक आशीष मोदी ने इस संबंध में सभी डीईओ माध्यमिक को निर्देश जारी किए हैं**
- **अर्द्धवार्षिक परीक्षा राज्य स्तर पर करने के संबंध में शिक्षा निदेशालय स्तर पर एक कमेटी का गठन किया**

बीकानेर, (निसं)। राज्य के सरकारी और प्राइवेट स्कूलों में पढ़ने वाले लगभग 40 लाख विद्यार्थियों की 9वीं से 12वीं कक्षा की अर्द्धवार्षिक परीक्षायें इस साल राज्य स्तर पर एक ही टाइम टेबल और एक ही पेपर से करने की तैयारी शुरू हो गई है। शिक्षा निदेशालय ने समान परीक्षा के तहत राज्य के सभी सरकारी और निजी स्कूलों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों की संख्या मांगी है। माध्यमिक शिक्षा निदेशक आशीष मोदी ने इस संबंध में सभी डीईओ माध्यमिक को निर्देश जारी किए हैं। सभी स्कूलों को आगामी तीन दिन में शाला दर्पण व पीएसपी पोर्टल पर यह सूचना अपलोड करनी होगी।

अर्द्धवार्षिक परीक्षा राज्य स्तर पर करने के संबंध में शिक्षा निदेशालय स्तर पर एक कमेटी का गठन भी कर दिया गया है। परीक्षा के संबंध में शिक्षा निदेशालय, राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद उदयपुर सहित पंजीयक शिक्षा विभागीय परीक्षाएं राजस्थान बीकानेर के अधिकारियों की एक ऑनलाइन मीटिंग भी हुई। जिसमें समान परीक्षा के आयोजन को लेकर विचार मंथन हुआ। जानकारी के अनुसार पिछले साल तक 9वीं से 12वीं कक्षा की अर्द्धवार्षिक परीक्षाएं जिला स्तर पर जिला समान परीक्षा योजना के तहत आयोजित की जाती रही है। इस बार परीक्षा राज्य स्तर पर एक समान टाइम टेबल और एक समान पेपर के आधार पर होगी। शिविरा कलेंडर के मुताबिक शिक्षा सत्र 2024–25 में 9वीं से 12वीं कक्षा की अर्द्धवार्षिक परीक्षाएं 12 दिसंबर से 24 दिसंबर तक आयोजित कराई जाएगी। समान परीक्षा योजना के तहत बोर्ड कक्षाएं 10वीं और 12वीं के विद्यार्थियों के प्रश्न पत्र 100ः सिलेबस के आधार पर तैयार किए जाएंगे। जबकि 9वीं और 11वीं कक्षा के विद्यार्थियों को 70 प्रतिशत सिलेबस में से प्रश्न पूछे जाएंगे। शिक्षा निदेशालय स्तर पर इसी सप्ताह समान परीक्षा के लिए नोडल एजेंसी और परीक्षा की फीस का निर्धारण कर दिया जाएगा। जयपुर में इस संबंध में 7 नवंबर को एक बैठक और आयोजित की जाएगी।

आशीष मोदी, निदेशक, माध्यमिक शिक्षा का कहना है कि 9वीं से 12वीं कक्षा की अर्द्धवार्षिक परीक्षा राज्य स्तर पर करने की तैयारी चल रही है। जल्द ही नोडल एजेंसी और परीक्षा फीस का निर्धारण किया जाएगा।

मुख्यमंत्री सर्वजन उच्च शिक्षा छात्रावृत्ति : 29 नवम्बर तक कमियों की पूर्ति करनी होगी

अजमेर, (कासं)। शैक्षणिक सत्र 2016–17 से 2022–23 में उत्तर मैट्रिक छात्रावृति योजनाओं, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग (केवल शैक्षणिक सत्रा 2022–23), आर्थिक पिछड़ा वर्ग एवं मुख्यमंत्री सर्वजन उच्च शिक्षा छात्रावृति में ऑनलाइन प्राप्त आवेदन पत्रों में से कुछ आवेदन पत्रों में आंशिक कमियाँ, आक्षेप, रैड फ्लैग में होने के कारण विभाग द्वारा आक्षेपित किया गया था। ऐसे आवेदन पत्रों में संबंधित विद्यार्थी या शिक्षण संस्थाओं द्वारा आक्षेप पूर्ति करने के लिए कई अवसर दिए जाने के उपरान्त भी इन विद्यार्थियों या शिक्षण संस्थाओं द्वारा आक्षेप पूर्ति कर ऑनलाईन फारवर्ड नहीं किया गया है। इसकी वजह से ऐसे छात्रावृति आवेदन पत्रों की स्वीकृति एवं भुगतान संबंधी कार्यवाही किया जाना संभव नहीं हो पा रहा है।

सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग के उपनिदेशक अनिल व्यास ने बताया कि विद्यार्थी हित में अन्तिम अवसर प्रदान करते हुए शैक्षणिक सत्रा 2016–17 से 2022–23 तक के ऑनलाईन आवेदन पत्रों का पूर्ण निस्तारण करने के लिए विद्यार्थियों के स्तर पर आक्षेप या अन्य कारणों से लम्बित आवेदन पत्रों की आक्षेप पूर्ति कर शिक्षण संस्थान को ऑनलाईन फारवर्ड करने की अन्तिम तिथि 22 नवम्बर, शिक्षण संस्थाओं को विद्यार्थियों से प्राप्त ऑनलाइन आवेदन पत्रों की जांच कर पात्र आवेदन पत्रों को स्वीकृतकर्ता अधिकारी तक ऑनलाइन फारवर्ड करने की अंतिम तिथि 29 नवम्बर, स्वीकृत अधिकारियों द्वारा समस्त पात्र आवेदन पत्रों को स्वीकृत कर भुगतान करने की अन्तिम तिथि 31 दिसम्बर तथा शैक्षणिक सत्र 2021–22 एवं 2022–23 के रैड फ्लैग में प्रदर्शित आवेदन पत्रों के संबंधित विद्यार्थी को वांछित दस्तावेज संबंधित जिला कार्यालय में प्रस्तुत करने की अन्तिम तिथि 30 नवम्बर निर्धारित की गई है। इन तिथियों के पश्चात् विद्यार्थी एवं शिक्षण संस्थान के स्तर पर लम्बित आवेदन पत्रों पर कोई विचार नहीं किया जाएगा।

सफाई भर्ती में आवेदन तिथि बढ़ाई

अजमेर, (कासं)। प्रदेश के नगरीय निकायों में सफाई कर्मचारियों के 23820 पदों के लिए निकाली गई सीधी प्रक्रिया जारी है। 6 नवंबर अंतिम तिथि थी, जिसे बढ़ाकर 20 नवम्बर कर दिया है। अजमेर संभाग के 13 निकायों के लिए डीएलबी ने 1445 सफाई कर्मचारियों के पदों के लिए आवेदन मांगे हैं। निकाय अजमेर के लिए 470 पद, ब्यावर में 177, किशनगढ़ 81, केकड़ी 74, पुष्कर 68, सरवाड़ 47, बिजयनगर 70, टोंक 248 पद, निवाई 33, मालपुरा 96, देवली 17, टोडारायसिंह 49 व उनियारा के लिए 15 पदों के लिए आवेदन मांगे गए हैं।

टाइगर के हमले से श्रद्धालु घायल

बौंली–बामनवास, (निसं)। सवाई माधोपुर के रणथंभौर टाइगर नेशनल पार्क के रणथंभौर दुर्ग के नोलखा गेट पर टाइगर के हमले से त्रिनेत्र गणेशजी के दर्शन करने गया श्रद्धालु घायल हो गया। घायल को सवाई माधोपुर चिकित्सालय में भर्ती कराया गया है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार श्रद्धालु शाम करीब 4:30 बजे त्रिनेत्र गणेशजी के दर्शन करके लौट रहा था। इसी दौरान बाघिन रेरोहेड के शावक ने श्रद्धालु पर हमला कर दिया जिससे उसकी शर्ट फट गई एवं हाथ पर खरोचें आई हैं।

घायल को सवाई माधोपुर चिकित्सालय में भर्ती कराया गया है। सूचना पाकर वन विभाग की टीम मौके पर पहुंची एवं श्रद्धालु व पर्यटकों की सुरक्षा को देखते हुए वन कर्मियों की टीम तैनात कर दी गई है। एक अक्टूबर से रणथंभौर नेशनल पार्क में टूरिस्ट सीजन शुरू हो गया है इस पार्क में कुल 10 जॉन है इनमें दो पारियों में टूरिस्ट को टाइगर सफारी कराई जाती है जिसमें सुबह की पारी 6 बजे से 9 तक एवं शाम की पारी 3 बजे से 6 बजे तक होती है इस समय रणथंभौर नेशनल टाइगर पार्क में 81 बाघ, बाघिन व शावक मौजूद है।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

गुरूवार 7 नवम्बर, 2024

कार्तिक मास, शुक्ल पक्ष, षष्ठी तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2081, पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र दिन 11:47 तक, धृति योग प्रातः 9:51 तक, कौलव करण दिन 12:28 तक, चन्द्रमा आज सायं 5:54 से मकर राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य–तुला, चन्द्रमा–धनु, मंगल–कर्क, बुध–वृश्चिक, गुरू–वृष, शुक्र–धनु, शनि–कुम्भ, राहु–मीन, केतु–कन्या राशि में।

आज रवियोग दिन 11:47 से आरम्भ होगा। आज डाला छठ महापर्व पूर्ण होगा। डाला छठ पर्व पर अस्तगामी सूर्य को अर्ध्य।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः शुभ सूर्योदय से 8:06 तक, चर 10:49 से 12:10 तक, लाभ–अमृत 12:10 से 2:53 तक, शुभ 4:15 से सूर्यास्त तक।

राहूकालः 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 6:45, सूर्यास्त 5:36

मेष

व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

वृष

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

मिथुन

परिवार में शुभ–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

कर्क

व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन हो सकता है। आर्थिक मामलों से संबंधित विवादित मामलों का निपटारा हो सकता है।

सिंह

परिवार में शुभ–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आज समय रचनात्मक कार्यों में व्यतीत होगा। घर–परिवार में सुख–सुविधाएं बढ़ेगी। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या

घर–परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में धार्मिक–सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

तुला
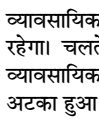
व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

वृश्चिक
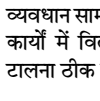
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। परिवार में शुभ–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

धनु
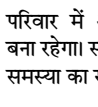
व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जा सकते हैं। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।

मकर
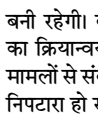
घर–परिवार के कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। परिवार में वाद–विवाद टालना ठीक रहेगा। खान–पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है। अनावश्यक धन खर्च होगा।

कुंभ
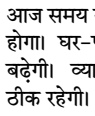
आर्थिक/वित्तिय मामलों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। आज अटका हुआ धन प्राप्त हो सकता है। अटके हुए कार्य बन सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

मीन
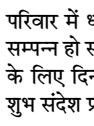
व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा।